रजि. नं. पी.बी./जे.एल–/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–74, अंक : 14, 29 जून-2 जुलाई 2017 तदनुसार 18 आषाढ़ सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

पाप का अपाकरण तुम जानते हो

–ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

विदा देवा अघानामादित्यासो अपाकृतिम्।
पक्षा वयो यथोपरि व्यस्मे शर्म यच्छतानेहसो
व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः।।

शब्दार्थ–हे **आदित्यासः** = आदित्य **देवाः** = दिव्य गुणो! अथवा दिव्य गुणवाले महात्माओ ! तुम **अघानाम्** = पापों का **अपाकृतिम्** = अपाकरण **विद** = जानते हो। **यथा** = जैसे **वयः** = पक्षी **पक्षा** = पक्षों को [अपने बच्चों के] **उपरि** = ऊपर [कर देते हैं] तद्वत् **अस्मे** = हमारे लिए **शर्म** = रक्षा, कल्याण, शरण **वि + यच्छत** = दो। **वः** = तुम्हारी **ऊतयः** = रक्षाएँ, प्रीतियाँ **अनेहसः** = त्रुटिरहित, निर्दोष हैं **वः** = तुम्हारी **ऊतयः** = रक्षाएँ, प्रीतियाँ ही **सु-ऊतयः** = उत्तम रक्षाएँ तथा प्रीतियाँ हैं।

व्याख्या–आदित्य देवों को ही पाप-नाश की युक्ति आती है, क्योंकि–

त आदित्यास उरवो गभीरा अदब्धासो दिप्सन्तो भूर्यक्षाः।
अन्त पश्यन्ति वृजिनोत साधु सर्वं राजभ्यः परमा चिदन्ति।।
–ऋ० २।२७।३

वे विशाल, गम्भीर, दबंग, पाप को दबाने की इच्छावाले और अनेक आँखोंवाले आदित्य पापों को भली प्रकार देखते हैं। अतः–**'महि वो महतामवो वरुण मित्र दाशुषे। यमादित्या अभि द्रुहो रक्षथा नेमघं नशत्'** [ऋ० ८।४७।१] हे वरुण! मित्र! अर्यमन् आदित्यो ! तुम महापुरुषों की, दाता के लिए, बड़ी रक्षा और प्रीति हो। तुम उसे द्रोह से= हिंसा से बचाते हो और उसे पाप नहीं लगता। द्रोह से बचना पाप से बचना है। हिंसा सब पापों की जड़ है। वेद में बड़े सुन्दर शब्दों में उपदेश है–**'सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यमर्यमा। मित्रः पान्त्यद्रुहः'** [ऋ० ८।४६।४] निःसन्देह वह मनुष्य सुनीथ = उत्तम नीतिवाला है, जिसे मित्र, वरुण, अर्यमा हिंसा से बचाते हैं।

यदि मन-वचन-कर्म में हिंसा न रहे तो संसार में कोई भी वैरी न रहे। जैसा कि पतञ्जलि जी ने योगदर्शन में कहा है– **'अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्संनिधो वैरत्यागः'** [यो० द० २।३५]– अहिंसा के परिपक्व होने पर उसके समीप वैर का त्याग होता है। जब सबके प्रति ही प्रीति है, तब वैर को अवकाश कहाँ? हमारे शास्त्र तो सब-कामों में अहिंसा को स्थान देते हैं– **'अहिंसयैव भूतानां कार्यं श्रेयोऽनुशासनम्'** [मनु० २।१५९]– प्राणियों को कल्याणोपदेश भी अहिंसा के द्वारा ही करना चाहिए, अर्थात् न किसी वैरभाव से और न ही घृणा की रीति से, वरन् परम प्रेम का अवलम्बन करके उपदेश करना चाहिए। श्रोता को विश्वास हो जाए कि यह उपदेष्टा मेरी मङ्गलकामना से मुझे मार्ग बता रहा है, तो वह सुनेगा, तब वह अपने दोषों को सुनकर उनका समर्थन न करेगा, वरन् अनुताप के अश्रुओं से उनके नाश का प्रयास करेगा, अतः आदित्यो ! पक्षी अपने बच्चों की रक्षा के लिए जैसे उन पर अपने पर फैला देते हैं, वैसे तुम अपनी प्रति-नीति के पक्ष हम पर फैला दो। आपके उन प्रीतिरक्षा-पक्षों में सुरक्षित रहकर हम पाप के पाश से बचे रहें।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

वैदिक भारत-कौशल भारत

आर्य महासम्मेलन 5 नवम्बर को नवांशहर में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन वैदिक भारत–कौशल भारत **5 नवम्बर 2017** रविवार को नवांशहर में करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय–समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 5 नवम्बर 2017 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में नवांशहर में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें।

–प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ऐसे धर्म को धिक्कार है, जो हमें सत्यता की ओर जाने से रोके

-ले. विवेक प्रिय आर्य, मथुरा (उप्र)

प्रत्येक प्राणी का यह स्वभाव होता है कि वह दु:ख से बचना तथा सुख को पाना चाहता है। फिर मनुष्य तो सृष्टि का सबसे श्रेष्ठ प्राणी है, वह क्यों नहीं सुख की प्राप्ति के लिए पूर्ण पुरूषार्थ करेगा ? आज संसार भर के प्रबुद्ध मनुष्य (चाहे वे किसी भी महत्वपूर्ण पद पर आसीन हो) संसार को सुखी बनाने का यत्न अपने-अपने ढंग से करते प्रतीत हो रहे हैं। परंतु इसके उपरांत भी आज सम्पूर्ण मानव समाज अशांति, आतंक, हिंसा, घृणा, मिथ्या, छल, कपट, ईर्ष्या, राग, द्वेष से ग्रस्त होकर अति दु:खी व अशांत है। विचार आता है कि क्या कारण है कि चिकित्सा करते रहने पर भी रोग बढ़ता ही जा रहा है ? मेरा मानना है कि इस सब का मूल कारण सत्य और वास्तविकता से अनभिज्ञ रहना अथवा जानकर भी उसके अनुकूल व्यवहार न करना ही है।

आज सारे संसार में विकास की होड लग रही है। हम छल से दूसरों को गिराकर उससे आगे जाना चाहते हैं। दूसरों की झोपड़ियां जलाकर अपने भव्य भवन बनाना चाहते हैं, दूसरों की थाली से सूखी रोटियां भी छीनकर स्वयं सुस्वाद सरस भोजन करना चाहते हैं, दूसरों के तन से जीर्ण शीर्ण वस्त्र भी छीनकर स्वयं बहुमूल्य वस्त्र पहनकर फैशन करना चाहते हैं तथा दूसरों का गला दबाकर स्वयं एकाकी अमर जीवन जीना चाहते हैं। क्या ऐसा जीवन हमारी सुख, शांति का विनाशक नहीं ? क्या मानवीय हत्या का हनन करने वाला नहीं है ? हमारा विकास तो तभी होगा जब हमारा जीवन सत्यता से परिपूर्ण होगा। क्योंकि सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं होता। धर्म के नाम पर, ईश्वर के नाम पर, देवी-देवताओं के नाम पर जितना रक्तताप व वैमनस्यता संसार में हो रही है, संभवत: उतना किसी अन्य कारण से नहीं। धर्म के नाम पर यह पाप क्यों ? धर्म और ईश्वर के नाम पर ईर्ष्या, राग, द्वेष, घृणा, हिंसा क्यों ? हमें धर्म का ऐसा सच्चा स्वरूप संसार के सामने लाने का प्रयास करना होगा, जिसमें पाखण्ड, अंधविश्वास व असत्य का कोई स्थान न हो। यही विचार संसार के ऋषियों (ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त) का रहा है।

महर्षि दयानंद सरस्वती तो परमाणु से लेकर परमेश्वर तक का यथार्थ ज्ञान व उससे अपना व दूसरों का उपकार करना ही विद्वानों का कर्तव्य बताते हैं। दुर्भाग्यवश महाभारत के समय से वेद के नाम पर, धर्म के नाम पर, ईश्वर के नाम पर, देवी-देवताओं के नाम पर कुछ विकृतियों ने जन्म लिया और वेद केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित रह गया। उस वैदिक कर्मकाण्ड के नाम पर मांसाहार, व्यभिचार, पशुबलि, नरबलि, स्त्री व शूद्र वर्ग के प्रति हीन भावना, मदिरापान आदि कुरीतियां इस देश में फैल गई। एक ईश्वर की जगह अनेक देवी-देवता प्रचलित होकर विश्व में हजारों मत-मतान्तर चल पडे।

सर्वशक्तिमान और सर्वसामर्थ्यसम्पन्न ईश्वर शक्ति के अस्तित्व में रहते हुए भी इन देवी-देवताओं (वह भी एक दो, नहीं, चार छ: नहीं अपितु पूरे तैंतीस करोड़) को प्रभाव में लाने की आवश्यकता क्यों हुई ? इसका किसी के पास कोई तर्क संगत उत्तर नहीं है। जीवन में पूजा का किसी रूप में कोई भी उपयोग संभव नहीं है और पूजा से कुछ भी प्राप्त कर पाना संभव नहीं, व्यक्ति जो कुछ प्राप्त करना चाहता है या करता है वह केवल अपने पौरूष और पुरूषार्थ भरे प्रयासों से प्राप्त करता है। लेकिन सहज और सरलतम रूप में प्राप्त करने की मनुष्य की स्वाभाविक मन: प्रवृत्ति ने उसे पौरूष और पुरूषार्थ से दूर ढकेल दिया और पूजा से वह कुछ भी प्राप्त नहीं कर सका। इस कारण देश और समाज पतित होता चला गया। समस्याएं बढ़ती गईं, समाधान संभव नहीं हो सका। देश पराधीन हो गया, विदेशी आक्रमणकारी हमारी राजसत्ता को हथियाकर बैठ गये। अत्याचार हो रहे, समाज में हाहाकार हो रहा, समाज लुटता-पिटता रहा पर कोई बचाने वाला पैदा ही नहीं हुआ। जिन देवी-देवताओं पर हम विश्वास साधकर बैठे वह दीन-हीन स्थिति में मौन धारण कर देवालयों में बैठे कांप रहे थे।

हमारी रक्षा करना तो दूर वह स्वयं अपनी रक्षा भी नहीं कर पा रहे थे। हम ढ़ोल, मजीरा, शंख, झांझर और चिमटा लेकर उन पत्थर के देवी-देवताओं के सामने गीत गाते कीर्तन करते रहे। मौत के भय से थर-थर कांपते कायर-कायर और कंठीमाला हाथ में लेकर ग्रहों, नक्षत्रों एवं राशियों में अपना भाग्य लेख पढ़ने के लिए जन्मकुण्डली बिछाकर बैठे रहे। मंदिरों-देवालयों में जाकर देवी-देवताओं की मूर्तियों के सामने माथा रगड़ते रहे लेकिन उनके दिव्य चक्षु इहलोक के पैशाचिक दुराचारों को कभी नहीं देख सके। विदेशी आक्रांता इन मूर्तियों को तोड़कर चकनाचूर करते रहे। उन्हें खण्ड-खण्ड कर कुओं, पोखरों में फैंका गया, पर न तो ये देवी-देवता कुछ कर सके और न उनके पुजारी। बल्कि यह पुजारी तो बलात्कार पीड़ित महिला की तरह असहाय और विवश होकर आंसू बहाते रहे। यदि इन्होंने इसके विपरीत स्वयं पौरूष की भाषा पढ़ी होती, धर्म और ईश्वर के सच्चे निराकार स्वरूप को समझा होता तो कोई शक्ति इस देश की ओर आंख उठाकर नहीं देख पाती। सोमनाथ मंदिर की कहानी जब हमारे स्मृति पटल पर उभर कर आती है तो आंखों में खून उतर आता है। हम केवल पौराणिक आख्याओं तक सीमित बने रहे। भूगोल से हम प्रारंभिक परिचय कभी प्राप्त नहीं कर सके। इसलिए धरती को कभी शेषनाग के फन पर टिका दिया, कभी कश्यप की पीठ पर और कभी गाय के सींग पर। क्योंकि सभी जीवधारियों की कालावधि निश्चित है, अत: झूठ को स्थाई रूप देने की दृष्टि से इन तीनों को त्रिकालजयी बना दिया और धरती का गैंद रूप देकर इधर से उधर उठाकर रखते रहे।

झूठ में हमारी अगाध आस्था रही है कि हमें अपने पूर्वजों की कही बात का भी ध्यान नहीं रहता। आर्यभट्ट और वरामिहिर हमारे ही पूर्वज थे, जिन्होंने पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा की परिधि, उनका व्यास और उनकी आपस की दूरी की माप सटीक रूप में दी थी। लेकिन हमारे झूठ के क्षेत्र में वह कहीं बाधक न बन जाये इसलिए उसे जान-बूझकर दृष्टि ओझल कर दिया। हमारे यह पुजारी के व्यवसायी टिपकादास धरती पर फल कटहेरी की तरह ब्रह्म का बीज बोते रहे हैं, जिनके बेल रूप में फैलकर कहीं पैर टिकाने को स्थान नहीं छोड़ा है। हमारे यहां महाभारत के महानायक कर्मयोगी श्रीकृष्ण और गीता के रूप में उपलब्ध उनकी वैचारिक धरोहर युगों-युगों तक मनु पुत्रों का मार्गदर्शन कर सकती है। लेकिन इन टिपकादासों ने उसकी विषयवस्तु की सहज विश्वसनीयता पर तमाम तरह के प्रश्नवाचक चिन्ह खड़े कर दिये हैं। श्रीकृष्ण जैसे योगीराज, अदम्य व्यक्तित्व पर भी इन मिथ्यावाद के प्रणेता टिपकादासों ने अपनी अतृप्त यौन पिपासा को विभिन्न रूपों में उन पर निर्ममता से प्रत्यारोपित कर उन्हें रसिक बिहारी, छैल बिहारी, रास बिहारी, लीला बिहारी और बांके बिहारी जैसे तमाम तरह के नाम देकर उन्हें राधा के पैरों में महावर रचाने बैठा दिया।

आज धरती पर उपलब्ध सभी सुख सुविधाएं और उसके उपकरण स्वयं मानव ने पैदा किये हैं। किसी देवी देवता का उसमें इंच मात्र का योगदान नहीं है किंतु पाखण्डी-मिथ्यावादी अपने स्वार्थ हित में उसका विभिन्न रूपों में गुणगान करते चले आ रहे हैं। कलान्तर में धीरे-धीरे इस देवत्व भाव को समान भाव से पशु पक्षियों पर भी आरोपित कर दिया और अंत में

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय.....

वेदों में पर्यावरण और विश्व कल्याण

आज विश्व का सर्वाधिक चर्चित और चिन्तनीय विषय पर्यावरण है। पर्यावरण प्रदूषण विश्व की प्रमुख समस्या है। पर्यावरण के घटक तत्व हैं वायु, जल, भूमि, वृक्ष-वनस्पतियाँ। अथर्ववेद में सर्वप्रथम जल-वायु के अतिरिक्त ओषधियों या वृक्ष वनस्पतियों को पर्यावरण का घटक तत्व बताया गया है। वेद में इन तत्वों को छन्दस् कहा गया है। छन्दस् का अर्थ है- आवरक या पर्यावरण। अथर्ववेद का कथन है कि जल-वायु और वृक्ष वनस्पति ये पर्यावरण के घटक तत्व हैं और ये प्रत्येक लोक में जीवनी शक्ति के लिए अनिवार्य हैं, यदि ये नहीं होंगे तो मानव का जीवित रहना सम्भव नहीं है। इन तत्वों के प्रदूषण या विनाशन से पर्यावरण प्रदूषण होता है। आज विश्वभर में भूमि, जलवायु आदि सबको अत्यधिक मात्रा में प्रदूषित किया जा रहा है। यांत्रिक उपकरण इस समस्या को और बढ़ा रहे हैं। जीवनी शक्ति प्राणतत्व या आक्सीजन के एकमात्र स्रोत वृक्ष वनस्पतियों को निर्दयतापूर्वक काटा जा रहा है। यदि वृक्ष नहीं होंगे तो मनुष्य को ऑक्सीजन नहीं मिल पाएगा और वह जीवित नहीं रह सकेगा। वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए जलवायु और वृक्ष वनस्पतियों को प्रमुख साधन बताया है।

वायु संरक्षण- वेदों में वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, द्यु-भू अर्थात् भूमि और द्युलोक के संरक्षण की बात अनेक मन्त्रों में कही गई है। साथ ही वृक्ष वनस्पतियों के संरक्षण का आदेश दिया गया है। वेदों में वायु को अमृत कहा गया है। वायु जीवनीशक्ति देता है। इसको भेषज या ओषधि कहा गया है। यह प्राणशक्ति देता है और अपानशक्ति के द्वारा सभी दोषों को बाहर निकालता है। ऋग्वेद में कहा गया है कि हम ऐसा कोई काम न करें, जिससे वायुरूपी अमृत की कमी हो। यदि हम प्राणवायु को कम करते हैं तो अपने लिए मृत्यु का संकट तैयार करते हैं। ऋग्वेद में मन्त्र आया है कि-

वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभु नो हृदे।
प्र ण आयूँषि तारिषत्।।
उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा।
स नो जीवातवे कृधि।।
यददो वात ते गृहे अमृतस्य निधिर्हितः।
ततो नो देहि जीवसे।।

अर्थात् वायु हमारे हृदय के स्वास्थ्य के लिए कल्याणकारक आरोग्य कर ओषधि को प्राप्त कराता है और हमारी आयु को बढ़ाता है। यह वायु हमारा पितृवत् पालक, बन्धुवत् धारक, पोषक और मित्रवत् सुखकर्ता है और हमें जीवन वाला करता है। इस वायु के घर अन्तरिक्ष में जो अमरता का निक्षेप भगवान द्वारा स्थापित है, उससे यह वायु हमारे जीवन के लिए जीवनतत्त्व प्रदान करता है। अथर्ववेद में मन्त्र आया है कि-

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रपः। त्वं हि विश्वभेषज देवानां दूत ईयसे

अर्थात् वायु के संचार से शरीर का मल निकलकर स्वास्थ्य मिलता है और तार, विमान, ताप , वृष्टि आदि का संचार होता है।

द्यु-भू संरक्षण- द्यु में सूर्य और अन्तरिक्ष आते हैं तथा भू में भूमि या पृथिवी। सूर्य ऊर्जा का स्रोत है, अंतरिक्ष वृष्टि करता है और पृथिवी ऊर्जा और वृष्टि का उपयोग करके मानवमात्र को अन्नादि देकर मानव जीवन को संचालित करती है। इस प्रकार द्यु- अन्तरिक्ष और भू ये तीनों परस्पर सम्बद्ध हैं। पृथिवी जल अग्नि या सूर्य समन्वित रूप में मानव जीवन का संचालन कर रहे हैं। यह संतुलन जब बिगडता है, तब विनाश की प्रक्रिया शुरू होती है। अतः वेदों में इनके संतुलन को सुरक्षित रखने के लिए आदेश दिए गए हैं। अनेक मन्त्रों में कहा गया है कि द्युलोक, अन्तरिक्ष और भूलोक को सभी प्रकार के प्रदूषणों से बचावें। अथर्ववेद में विशेष रूप से कहा गया है कि भूमि के मर्मस्थानों को क्षति न पहुँचावे। ऐसा करने से जल के स्रोत आदि नष्ट होते हैं और भू-स्खलन तथा भूकंप आदि की संभावना बढ़ती है।

जल संरक्षण- वेदों में जल की उपयोगिता और उसके महत्व पर बहुत बल दिया है। जल जीवन है, अमृत है, भेषज है, रोगनाशक है और आयुवर्धक है। जल को दूषित करना पाप माना गया है। जल के विषय में कहा गया है कि जल से सभी रोग नष्ट होते हैं। जल सर्वोत्तम वैद्य है। जल हृदय के रोगों को भी दूर करता है। जल को ईश्वरीय वरदान माना गया है। अनेक मन्त्रों में जल को दूषित न करने का आदेश दिया गया है। जल और वृक्ष वनस्पतियों को कभी हानि न पहुँचावें। पुराणों में तो यहाँ तक कहा गया है कि नदी के किनारे या नदी में जो थूकता है, मूत्र करता है या शौच आदि करता है, वह नरक में जाता है और उसे ब्रह्महत्या का पाप लगता है। ऋग्वेद में कहा गया है कि-

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तये।
देवा भवत वाजिनः।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस मन्त्र का भाष्य करते हुए लिखते हैं कि हे विद्वानों! तुम अपनी उत्तमता के लिए जलों के भीतर जो मार ड़ालने वाला, रोग का निवारण करने वाला अमृतरूप रस तथा जलों में औषध हैं उनको जानकर उन जलों की क्रियाकुशलता से उत्तम श्रेष्ठ ज्ञान वाले हो जाओ। यजुर्वेद के छठें अध्याय के 22वें मन्त्र में कहा गया है कि मापो हिंसीः अर्थात् जल को नष्ट मत करो।

वृक्ष वनस्पति संरक्षण- वेदों और ब्राह्मण ग्रन्थों में वृक्ष वनस्पतियों का बहुत ही महत्त्व वर्णन किया गया है। वृक्ष वनस्पति मनुष्य को जीवनी शक्ति देते हैं और उसका रक्षण करते हैं। ओषधियाँ प्रदूषण को नष्ट करने का प्रमुख साधन हैं। इसलिए उन्हें विषदूषणी कहा गया है। वेद में वृक्षों को पशुपति या शिव कहा गया है। ये संसार के विष कार्बनडाईआक्साईड को पीते हैं और इस प्रकार ये शिव के तुल्य विषपान करती हैं और प्राणवायु या ऑक्सीजनरूपी अमृत देती हैं। अतः वृक्षों को शिव का मूर्तरूप समझना चाहिए। इसी आधार पर ऋग्वेद में वृक्षों को लगाने का आदेश है। ये जल के स्रोतों की रक्षा करते हैं। एक मन्त्र में कहा गया है कि वृक्ष प्रदूषण को नष्ट करते हैं, अतः उनकी रक्षा करनी चाहिए।

इस प्रकार पर्यावरण की समस्या को खत्म करने के लिए हमें वैदिक चिन्तन को आधार बनाना होगा। वेदों के अनुसार यदि हम वनस्पतियों, ओषधियों, वृक्षों तथा जल और वायु का संरक्षण करते हैं तो इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। इनका संरक्षण न होने के कारण ही आज प्रदूषण की समस्या फैलती जा रही है, जल दूषित हो रहा है, शुद्ध वायु नहीं मिल रही है जिससे अनेक प्रकार की बीमारियां बढती जा रही हैं।

-प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

अपने आदर्श संस्कृति को कैसे बचाऐं

-ले. पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

जिन संस्कारों, विचारों, मान्यताओं से परिवारों में शिष्टाचार पितृभक्ति उच्च संस्कार व आत्म शान्ति समाप्त हो रही हो और जिसके कारण विदेशी पाश्चात्य विकृत संस्कृति हमारे परिवारो में घुस कर चूल्हे तक पहुंच गयी हो और परिवार के सदस्यों के खून के कण-कण में समा रही हो उसको बचाना सभी बुद्धि जीवियों का प्रथम कार्य होना अभिष्ट है।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत की प्राचीन संस्कृति, संस्कार, व स्वाधीनता को बचाने में लगा दिया। उनका आशय था कि भारत की मूल संस्कृति व संस्कार ईश्वरीय वाणी वेदानुकूल होने से, कई विदेशी संस्कृतियों के सम्पर्क में आई, कभी मुगलों के, कभी जंगलियों के कभी अंग्रेजों के सम्पर्क में आने पर भी अन्य संस्कृतियों को प्रभावित करती रही किन्तु किसी भी संस्कृति के सामने झुकी नहीं। संसार के इतिहास में कई संस्कृतियां उत्पन्न हुई किन्तु आज उनका कोई नामलेवा भी नहीं है। किन्तु भारत की संस्कृति महाभारत काल के बाद आज तक अनेक झंझावतों से गुजरती हुई भी जीवित है। भारत के भोगोलिक, भौतिक, पर्यावरण व सृष्टि उत्पत्ति का मूल केन्द्र तथा वैदिक संस्कृति व ज्ञान के कारण ही आज जीवित है और जीवित रहेगी।

लार्ड मैकाले ने भारत में अंग्रेजी संस्कार और संस्कृति फैलाने का

षड्यन्त्र किया

आर्य भारत में बाहर से आये थे, नहीं, नहीं यह सबसे बड़ा षड्यन्त्र था, झूठ था। अपितु आर्य भारत के मूल आदिवासी थे, आइए विचार करते है। 1857 की क्रान्ती असफल होने का कारण भीतर घात था, और देश द्रोहियों के कारण असफलता मिली, अंगेजों ने क्रान्तिकारियों को बुरी तरह कुचल दिया था। ऐसी विषम परिस्थिति में भी महर्षि दयानन्द जी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन का नवजागरण किया था। 1857 से 1947 तक देश के नवयुवकों ने स्वतन्त्रता आन्दोलन के महान यज्ञ में आहूतियां दी फांसी के फन्दों को खुशी से चूमा। आर्य समाज के वीरों ने सर्वाधिक प्रतिशत स्वतन्त्रता आन्दोलन में आहूतियां दी थी।

लार्ड मैकाले ने भारत की शिक्षा पद्धति में महान षड्यन्त्र किया कि आर्य बाहर से आये, और भारत पर काबिज हो गये, जो सर्वथा झूठ था।

सृष्टि उत्पत्ति के आदि काल से, व मध्यकाल, व वर्तमान काल के कुछ आर्य श्रेष्ठो की झलक

आदिकाल के आर्य संक्षेप में- भारत (आर्यवर्त) की धरती पर सर्वप्रथम ईश्वर ने चारों वेदों का ज्ञान व अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा चार ऋषियों के हृदय में प्रकाशित किया। इसी भारत की धरती पर-मनु ऋषि, ब्रह्मा ऋषि, प्रजापति पतञ्जलि, व्यास, जैमिनी, ने दर्शन शास्त्रों का ज्ञान कराया- इसी धरती पर मर्यादा पुरूषोत्तम आर्य श्री राम, तथा योगीराज श्री कृष्ण हुए-यहीं पर कुमारिल भट्ट ने वेदों की रक्षा की-यही पर अनेक देव पुरूषो ने आदि काल में जन्म लिया, और ईश्वरीय संस्कृति का सन्देश दिया। इसी धरती पर अनेक ऋषिकाओं का जन्म हुआ-यही पर, माता दुर्गा, मदालसा माता, सीता, द्रोपदी, अनुसूया, गांन्धारी आदि अनेक वीरांगनाएं, एवं तपस्वीयों ने जन्म लिया।

महर्षि बाल्मीकि, सूरदास, तुलसीदास, कबीर दास, रविन्द्रनाथ टैगोर व अनेक कवि व साहित्यकारों का जन्म हुआ-यही पर छत्रपति वीर शिवाजी, महाराणा प्रताप, भामाशाह, पृथ्वीराज चौहान, आदि-यहीं पर महारानी पदमावती, झांसी की रानी, रणचन्डी लक्ष्मी बाई व अनेक वीरांगनाएं हुई-इसी धरती पर गुरूनानक, गुरू गोविन्द सिंह वीर बन्दा बैरागी, शहीद भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, वीर सावरकर सुभाष चन्द्र बोस, योगीराज अरविन्द, बाल गंगाधर तिलक, विपिन चन्द्रपाल, पं. लेखराम, लाला लाजपत राय, महात्मा, हंस राज, स्वामी श्रद्धानन्द, आदि यह भारत भूमि आर्यों की जन्म स्थली हैं उक्त सभी आर्य थे।

विशेष आर्य युग पुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी-

इसी धरती पर क्रान्तदर्शिता के अग्रदूत, महान सामाजिक सुधारक, रूढ़ी परम्पराओं के सुधारक, धार्मिक अन्धविश्वासों को उखाड़ने वाले, वेदों का शुद्ध ज्ञान देने वाले-स्वराज्य शब्द, एवं स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ाने वाले, नारी शिक्षा को सर्वप्रथम लागू करने वाले, सच्चे ईश्वर की अनुभूति कराने वाले, जाति-पाति छुआ-छूत को मिटाने वाले, भारत की प्राचीन संस्कृति को पढ़ाने वाले, तथा उक्त सभी बुराइयों को दूर करने के लिये, सदैव-सदैव के लिये, आर्य समाज के संस्थापक वैचारिक क्रान्तीकारी विचारों का ज्ञान कराने वाला अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के रचयिता, युग पुरूष महर्षि दयानन्द जी का इसी धरती पर जन्म हुआ।

यही धरती भारत वर्ष आर्यों की जन्म भूमि, धर्मभूमि व कर्म भूमि है। देशवासियों, यह तो थोड़े से आदि व वर्तमान आर्यों के नामो का संकेत किया है।

लार्ड मैकाले

अब आप ही मनन कीजीए, लार्ड मैकाले ने जो शिक्षा पद्धति में एक पाठ यह क्यों डाला कि आर्य बाहर से आये और इस धरती पर काबिज हो गये। हम सब भारतीय एक स्वर में इस झूठ का विरोध क्यों नहीं करते हैं।

भारत की संस्कृति को कैसे बचाऐं-आज के युग को चुनौती

आज जब अंग्रेजो को हमारा देश छोड़े हुए 70 वर्ष हो गये है, हमारी मुख्य समस्या है, हम अपनी संस्कृति को कैसे बचाऐं। अंग्रेजों के हटते ही हमारी संस्कृति फलनी फूलनी चाहिए थी, किन्तु ऐसा नज़र नहीं आता। कारण यह था कि विगत पांच हजार वर्षो से हमारी संस्कृति मृतप्राय: हो गयी थी, तथा पाश्चात्य संस्कृति टकराव, वैदिक संस्कृति के शव से हुआ यही कारण है, पाश्चात्य संस्कृति भारतीयों के रक्त के कण-कण में बस गयी हैं आज हम तथा कथित संस्कृति की माला तो फेरते है, किन्तु जीवन में नहीं उतार रहे हैं।

आज असली समस्या अपनी संस्कृति को पुनर्जीवित करने की है। अहिंसा, सत्य ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास, ब्राह्मा, क्षत्रिय, वैश्य, वर्ण व्यवस्था सोलह संस्कार, अपरिग्रह, निष्कामता, त्याग, तपस्या, ईश्वर जीवात्मा, परमात्मा, भोग त्याग इह लोक, परलोक आज ये शब्द सब खोखले हो चुके है। इन खोखले शब्दों को फिर से प्राणवान बनाना, इनमें जीवन भरना, आज हमारी असली समस्या है।

आज हम संस्कृति का अर्थ नाचना गाना, स्वांग द्वारा नकल करना, ईश्वर के नाम से जनता को धोखा देना, काल्पनिक आध्यात्म मान्यताओं को प्राश्रय देना विदेशों में जाकर नाच गाना करना आदि को ही हम संस्कृति को बचाना समझ रहे है।

भारतीय संस्कृति भौतिक वादी नहीं है, अपितु वैदिक आध्यात्मवादी है, और उक्त पेराग्राफ में व्यक्त शब्द हमारी संस्कृति के प्राण हैं, आत्मा है। आज हमें वैदिक संस्कृति को क्रियात्मक करने की आवश्यकता है यह कार्य आसाधारण है, आज हमने असत्य मान्यताओं का खंडन करना छोड़ दिया है। आर्य समाज जो कुछ भी कर रहा है निसन्देह उत्तम है परन्तु बहुत थोड़ा हैं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश के नवयुवकों का ध्यान संस्कृति की रक्षा से हटकर राजनीति की तरफ चला गया है, हर कोई नेता बनना चाह रहा है। राजनीति इनती बुरी भी नहीं है, किन्तु देश को एक नहीं बना सकती है। मनुष्यों को लड़ाने के आधार में राजनीति काम कर रही होती हैं संस्कृति का आधार गद्दी प्राप्त करना नहीं अपितु जीवन बनाना हैं

अध्यात्मवाद की विचारधारा को भौतिकवादी युग में क्या रूप देना होगा यह हमारी असली समस्या है।

यदि हम अपनी संस्कृति संस्कारों की यों ही उपेक्षा करते रहे तो आने वाला कल में भारतीय संस्कृति धीरे-धीरे विलुप्त होती जायेगी। पश्चिमी सभ्यता बढ़ती जायेगी हमें जागना ही होगा।

आर्यों का मूल निवास स्थान

-ले० शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर ढाढाबाड़ी, कोटा

(गतांक से आगे)

जिन्द अवेस्था से होता है। अत: स्वाभाविक है कि आर्यो का मूल निवास स्थान भारत के समीप ही कहीं होगा क्योंकि वेद और जिन्द अवेस्था में पर्याप्त साम्य है। यह साम्य इस बात का प्रतीक है कि इन दोनों देशों भारत तथा ईरान के निवासी कभी बहुत दिनों तक साथ रहे होंगे। कालान्तर में किसी कारण विशेष से उन्होंने स्थान परिवर्तन किया होगा। वे लोग वहां से तीन जत्थों में खना हुए होंगे। उनमें से एक जत्था भारत एक यूरोप तथा एक ईरान चला गया होगा।

(2) मैक्स मूलर ने भी प्रो. गाइल्स की तरह भाषा विज्ञान का सहारा लिया है। उनका कहना है कि एशिया के दक्षिण पूर्व और यूरोप के उत्तर पश्चिम में दो भाषाओं की श्रेणी का प्रभाव है और मध्य एशिया में आकर ये एक दूसरे को प्रभावित करती है।

(3) इन विद्वानों की धारणा है कि यही स्थान (मध्य एशिया) सभ्य जीवन का प्राचीनतम केन्द्र रहा है।

(4) सभी भाषाओं में पाये जाने वाले शब्दों के अध्ययन के आधार पर ही मध्य एशिया आर्यों का मूल निवास स्थान लगता है।

(5) मध्य एशिया में बोगाज कोई में कुछ सन्धि पत्रों के अभिलेख प्राप्त हुआ हैं जिनमें वैदिक देवताओं (इन्द्र, वरुण मित्र) के रूपान्तरित नाम मिले हैं।

(6) मिश्र में एल अमनी नामक स्थान पर प्राप्त मिट्टी के कुछ अंश इस बात के प्रतीत हैं कि ईरानी तथा भारतीय कुछ समय तक ईरान में साथ रहे थे।

(7) एडवर्ड मेयर ने इस स्थान का समर्थन करते हुए पामीर के पठार के आस-पास आर्यों का मूल स्थान तय किया। उसने अपने समर्थन के पक्ष में लिखा है कि यूरोपीय भाषाओं में हिट्टाइट भाषा प्राचीनतम है। सन् 1900 बी.सी. में केपडोशिया में रहने वाले हिट्टी भाषी थे और यह प्रदेश मध्य एशिया के समीप ही है।

(8) बैन्डेस्टीन ने भी भाषा विज्ञान के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि इन्डो-यूरोपियन आर्य आरम्भ में एक स्थान पर लगातार सम्मिलित रूप से रहते थे और उन्होंने यूराल पर्वत का दक्षिणी भाग निर्धारित किया है। उनका कहना है कि आर्य लोग यही से भारत तथा ईरान में गए थे।

मीमांसा-आर्य पहले मध्य एशिया में निवास करते थे और वहां से ईरान भारत तथा यूरोप में पहुंचे थे। कुछ इतिहासकार इस मत से सहमत नहीं है। उनका कहना है कि आर्यों के प्रदेश की भूमि अत्यन्त उर्वरा तथा जल से परिपूर्ण थी परन्तु मध्य एशिया में इन दोनों बातों का अभाव है। इसके साथ ही आर्यों के आदि ग्रन्थ वेद में मध्य एशिया का उल्लेख भी नहीं मिलता है। तीसरे इस धारणा के पुष्टि कर्त्ता यह बताने का प्रयास भी नहीं करते कि आर्य लोग अपने मूल निवास स्थान में इतनी कम संख्या में क्यों हैं ?

उत्तरी ध्रुव-आर्य लोग मूल रूप से उत्तरी ध्रुव प्रदेश के निवासी थे। इस धारणा के प्रतिपादक बाल गंगाधर तिलक हैं। उन्होंने अपनी धारणा की पुष्टि में निम्न तर्क रखे-

(1) ऋग्वेद में एक सूक्त है जिसमें दीर्घकालीन उषा की स्तुति की गई है और यह दीर्घकालीन उषा ध्रुव पर ही होता है।

(2) महाभारत में सुमेरू पर्वत का वर्णन करते हुए 6 मास का दिन और 6 मास की रात्रि का उल्लेख मिलता है जो उत्तरी ध्रुव पर ही संभव है।

(3) ऋग्वेद में जगह-जगह ध्रुव का वर्णन मिलता है। उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर तिलक ने यह धारणा इतिहास प्रेमियों के सम्मुख रखी। उनका कहना है कि 800 ई. पूर्व तक आर्य लोग उत्तरी ध्रुव पर ही रहे और जब वहां हिम प्रलय हुआ तो वे ईरान जाकर बस गए। उनके अनुसार हिम प्रलय के पूर्व उत्तरी ध्रुव की जलवायु अच्छी थी और आर्य लोग वहां अपने मनोनुकूल खाद्यान्न पैदा कर लेते हैं।

मीमांसा-तिलक ने अपने मत का प्रतिपादन केवल साहित्य के आधार पर किया है और साहित्यिक वर्णन में यह आवश्यक नहीं कि केवल देखे हुए स्थान का वर्णन किया जावे। दूसरी बात यह है कि यदि आर्य लोग उत्तरी ध्रुव के निवासी होते तो सप्त सैन्धव को 'देवकृत योनि' नहीं कहते। तिलक ने स्वयं उमेशचन्द्र विद्यारत्न के सामने स्वीकार किया कि उन्होंने मूल वेद नहीं पढ़े हैं केवल अंग्रेजों द्वारा किये गये वेद भाष्य पढ़े हैं। आमि मूल वेद अध्ययन करि नाई। आमि साहब अनुवाद पाठ करिछा छे।

(मानवेर आदि जन्म भूमि पृष्ठ 124)

उत्तरी ध्रुव विषयक मान्यता के संबंध में तिलक ने लिखा है-It is clear that soma ras was extracted and perified at nights in the arctic. इसका प्रत्याख्याज करते हुए नारायण भवानी पावगी ने अपने ग्रन्थ आर्य वर्त्तातील आर्चाची जन्मभूमि में लिखा है-कि उत्तरी ध्रुव में तो सोमलता होती ही नहीं सोमलता तो हिमालय पर्वत के एक भाग मुंजवान पर्वत पर होती है।

आर्यो का आदि देश भारत-इतिहासकारों की एक श्रेणी ऐसी भी है जो आर्यों को विदेशी नहीं मानकर भारतीय ही स्वीकार करती है। इस श्रेणी के विद्वानों की मान्यता है कि आर्य भारत में बाहर से नहीं आए। वे मूल रूप में यहीं रहते थे। डॉ. अविनाशचन्द्र दास, श्री गंगाधर झा, डी. एस. त्रिवेदी, डॉ. सम्पूर्णानन्द, डॉ. राजबलिपाण्डे के नाम इनमें उल्लेखनीय हैं। किन्तु वे भारत के विभिन्न प्रदेशों को इस हेतु नियत करते हैं। डॉ. अविनाशचन्द्र सप्त सिन्धु, राजबलि पाण्डेय 'मध्य प्रदेश' डॉ. एस. डी. त्रिवेदी कश्मीर तथा हिमालय प्रदेश को आर्यों का मूल निवास स्थान मानते हैं। डॉ. एस. डी. त्रिवेदी मुल्तान के पास देविका नदी के समीप का प्रदेश इसके लिए नियत करते हैं।

भारतीय इतिहासकारों के मत की पुष्टि में निम्न तर्क है-

(1) ऋग्वेद में जिस भौगोलिक स्थिति का वर्णन है वह सप्त सैन्धव प्रदेश में ही मिलती है।

(2) डॉ. अविनाशचन्द्र दास के अनुसार आर्यों की एक शाखा ऐसी थी जो अहुरमज्दा की उपासना करती थी और दूसरी अहिरमन की उपासक थी। कालान्तर में इन दोनों में संघर्ष हुए। अहुरमज्दा की उपासना करने वाले हार कर भागे और ईरान में जाकर बस गए। ईरानियों के धार्मिक ग्रन्थ जिन्द अवस्था में इसका वर्णन है।

(3) ऋग्वेद में पढ़ने से ज्ञात होता है कि आर्यों का ज्ञान सप्त सैन्धव तक ही सीमित था। अत: वे यहीं के निवासी थे।

(4) आर्यो ने सप्त सैन्धव को 'देव कृत योनि' की संज्ञा दी है। इससे स्पष्ट है कि आर्यों का सप्त सैन्धव से अपार स्नेह था। इसीलिए कहा जाता है कि सप्त सैन्धव प्रदेश ही आर्यों का मूल निवास स्थान था।

(5) वेदों में यत्र-तत्र सप्त सैन्धव का गुणगान भी मिलता है।

(6) डॉ. राजबलि पाण्डेय मध्य प्रदेश वर्तमान उत्तर प्रदेश तथा बिहार प्रदेश को आर्यों का मूल निवास स्थान मानते हैं। अयोध्या और गया उनके मुख्य केन्द्र थे। उत्तरी पश्चिमी देशों में से होकर वे ईरान तथा अन्य देशों में पहुंचे।

(7) वेद परवर्ती साहित्य और पुराणों में सुरक्षित परम्पराएं इस बात की साक्ष्य हैं कि आर्य मध्य देश के निवासी थे।

(8) भारतीय साहित्य में कहीं भी इस बात के संकेत नहीं है कि आर्य भारत में बाहर से आए थे।

(9) भाषा विज्ञान के आधार पर भी भारत ही आर्यों का मूल निवास स्थान ठहरता है क्योंकि आर्य परिवार की भाषाओं में संस्कृत भाषा के शब्द यूरोपीय भाषाओं से अधिक है। इससे निश्चय है कि आर्य भारत के ही निवासी है।

मीमांसा-(1) यदि आर्य भारत के ही मूल निवासी होते तो वे सर्वप्रथम भारत का ही आर्यीकरण करते। ईरान तथा यूरोप न जाकर दक्षिणी भारत में जाकर वहाँ अपनी सभ्यता फैलाते।

(2) भाषा के आधार पर भी भात को आर्यों का मूल निवास स्थान नहीं मान सकते क्योंकि दक्षिण भाग की भाषाएं संस्कृत से अप्रभावित है।

(क्रमशः)

महर्षि सत्यार्थ प्रकाश और मैं

-ले० अभिमन्यु कुमार खुल्लर 22, नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म. प्र.)

(गतांक से आगे)

ने योनि आकार के पात्र में लम्ब वल खड़े शिवलिंग की पूजा प्रारम्भ करा दी होगी या पुराण के किसी आख्यान में शिवलिंग की पूजा का प्रावधान होगा। यही पूजा आज भी चल रही है।

शिवलिंग पूजा का निषेध, वर्जित कराना बहुत ही दुसाध्य, जोखिम भरा काम था लेकिन महर्षि ने प्राणों की चिन्ता न करते हुए भी यह कार्य अत्यन्त कठोरता से किया। केवल महर्षि दयानन्द ही ऐसा कार्य कर सकते थे. कुछ उदाहरण प्रस्तुत करता हूं।

(1) एक दिन जगन्नाथ मालवीय, घोटुगिरि गुसाई आदि सैकड़ों मनुष्य स्वामी जी के पास पहुंचे। छोटगिरि आते ही स्वामी जी की जांघ पर जांघ मार कर बैठ गया। शेष खड़े रहे। स्वामी जी से कहा-बच्चा, अभी तक तुम कुछ पढ़ा नहीं, जाकर पढ़ो।

इस बात को आप नहीं जानते कि जिस लिंग से सबकी उत्पत्ति होती है, उसका तुम खण्डन करते हो और शिवलिंग के समान हाथ बनाकर एक श्लोक पढ़ा। स्वामीजी ने परिचय पूछा। जगन्नाथ मालवीय ने बताया कि जैसे काशी में विश्वनाथ हैं, उसी के समान मिर्जापुर में जो 'बूढ़े महादेव' है, यह उसके पुजारी हैं। स्वामी जी ने कहा-कांशी में कौन विश्वनाथ है ? विश्वनाथ तो विश्वभर में है, बनारस में तो 'पिन्डीनाथ' हैं। फिर जगन्नाथ मालवीय ने पूछा-आपका वास्तविक अभिप्राय क्या है ? स्वामी जी ने कहा कि एक परमेश्वर की उपासना मैं मानता हूँ। और जड़ पाषाण आदि की बनाई हुई मूर्ति के पूजन का खण्डन करना हूं। इस पर छोटुगिरि ने स्वामीजी के सिर पर हाथ फेरा औ बोला बच्चा ! तू नहीं जानता कि इसी लिंग ने तुझको उत्पन्न किया है। स्वामीजी ने कहा-तुम्हारी उत्पत्ति इस पाषण के लिंग से हुई होगी, हम तो अपने माता-पिता से उत्पन्न हुए हैं।

(1) स्वामी दयानन्द के ठहरने की व्यवस्था एक मन्दिर में की गई थी। स्वामी जी ने पूछा-किसका मन्दिर है। बताया गया शिव का मन्दिर में शिव की मूर्ति है ? उत्तर मिला नहीं, शिललिंग है। महर्षि ने कहा-तब तो कैलाशवासी शिव हिजड़ा हो गया।

(3) स्वामी जी से किसी व्यक्ति ने लोटा मांगा। स्वामी जी ने पूछा किसलिए चाहिए ? उस व्यक्ति ने कहा-शिवलिंग पर जल चढ़ाना है। महर्षि ने कहा-ईश्वर ने तुम्हें लोटा दिया है। भरो और चढ़ा दो महर्षि जैमिनी के पश्चात् महर्षि दयानन्द वेदोक्त ईश्वर की पुर्नस्थापना का प्रयत्न करने जा रहे थे। देश में ही असंख्य-मत-मतान्तरों, पूजा-पद्धतियों का घटाटोप छाया हुया था। सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारह से चौदह समुल्लास (अध्याय) के 220 पृष्ठों में इनका विवरण और उनकी निस्सारता का वर्णन मिलता है। इनके अध्ययन से पता चलता है कि कितने व्यक्तियों से उन्हें लोहा लेना पड़ा होगा।

महर्षि दयानन्द के निधन के 134 वर्ष पश्चात् भी एक वेदोक्त-ईश्वर की स्थापना का स्वप्न अभी दूर बहुत दूर है।

वेदोक्त ईश्वर की स्थापना समस्त सामाजिक बुराईयों और अंध विश्वासों के उन्मूलन में शिक्षा का नितान्त अभाव ही प्रमुख कारण मानते थे। आमजन का बौद्धिक स्तर उठाने के लिये अनिवार्य शिक्षा के पक्षधर थे। महर्षि के काल में 20 करोड़ आबादी का एक प्रतिशत से ज्यादा शिक्षित वर्ग नहीं होगा। उस पर भी मिडिल तक पढ़ लिया, बहुत हो गया। बाऊजी के एक दक्षिण भारतीय हाई स्कूल पास मित्र श्री राघवर साहब डिप्टी कलेक्टर थे। कलेक्टर या जिलाधीश तो आयातित ही होते थे। कन्या शिक्षा की स्थिति और भी दर्शनीय थी। मेरी स्वर्गवासी तीन बड़ी बहनों ने स्कूल का मुंह भी नहीं देखा था।

पांच वर्ष के बालक-बालिकाओं के लिये शिक्षा की अनिवार्य व्यवस्था चाहते थे। सैद्धान्तिक रूप में ही नहीं, उन्होंने स्वयं ही पाठशालाएं स्थापित कीं।

शिक्षा में ज्ञान-विज्ञान के समस्त तथाकथित आधुनिक विषय गणित, भौतिक, रसायन शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र के अध्यापन की व्यवस्था चाहते थे। ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में उन्होंने प्रमाणित कर दिया है कि अंकगणित, बीज गणित व रेखागणित वेद में उपलब्ध हैं। 'शून्य' के आविष्कारक 'आर्य भट्ट' थे। इस आविष्कार ने अन्तरिक्ष विज्ञान में अभूत पूर्व-क्रान्ति कर ऋषियों की पहुंच को प्रमाणित कर दिया। न्यूटन का बतलाया जाने वाला पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त 'भास्करा-चार्य' का है। जिसका हजारों वर्ष पूर्व उल्लेख उन्होंने अपने 'सिद्धान्त-शिरोमणि' ग्रन्थ में किया है। विमान विद्या का ज्ञान भी भारतीय मनीषियों को था। महर्षि ने 'विमान शास्त्र' ग्रन्थ का उल्लेख किया है। ईंधन के रूप में पारे का उल्लेख भी किया है। रावण के पुष्पक विमान था जिसमें बैठ कर मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम का दल अयोध्या पहुंचा था। पवन पुत्र हनुमान भी विमान में बैठ कर जड़ी-बूटी लाने गए होंगे। मानव शरीर धारी हनुमान जी के अतिरिक्त किसी अन्य मानव का वायु में सशरीर उड़ कर जाने का उल्लेख कहीं नहीं मिलता।

यह तो अब सर्वविदित है कि शिवकर बापूजी तलपडे ने राइट ब्रदर्स से आठ वर्ष पहिले मुम्बई की चौपाटी पर विमान उड़ाने का परीक्षण किया था। लेख के अन्त में टिप्पणी देखिए।

आचार्य सुश्रुत के पास शल्य चिकित्सा के सर्वोत्तम अति सूक्ष्म औजार थे।

यही नहीं कि महर्षि वेदों में विज्ञान की उपस्थिति का उल्लेख कर गर्व-गर्जना कर रहे थे। आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में अग्रणी जर्मनी में भारतीय युवकों को जर्मनी भेज कर प्रशिक्षित करने के कार्यक्रम पर काम कर रहे थे।

निश्चित ही प्राथमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा और उच्च शिक्षा की भाषा संस्कृत ही होती। मैक्समूलर मैकाले के लिये भले ही वेद गड़रिए के गीत हों, महर्षि दयानन्द संस्कृत को ज्ञान-विज्ञान के विचारों की संवाहक के रूप में पर्याप्त समृद्ध मानते हैं। और अब तो वैज्ञानिक कम्प्यूटर के लिये सर्वोत्तम भाषा मानते है। भारत का रक्षा मन्त्रालय भी अपने कोड संस्कृत में तैयार कराने का समाचार दो तीन वर्ष पहिले प्रिंट मीडिया में आ चुका है। विश्व के उन्नत देशों में संस्कृत पठन पाठन की व्यवस्था है। संस्कृत को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाने की बात पर नाक-भौ चढ़ाने वालों को बताना चाहूंगा कि तुर्की जब स्वतंत्र हुआ था तब उस देश की कोई भाषा नहीं थी। तुर्की 'बोली' के रूप में ही प्रचलित थी। राजकाज की भाषा अरबी-फारसी थी। तुर्की देश के निर्माता कमालपाशा ने एक झटके में तुर्की को राजभाषा घोषित कर दिया। रेगिस्तान में बसाया गया देश इजराइल यूरोप से विशेष कर जर्मनी से निस्काषित यहूदिया का देश है जर्मनी में भी वे आपसी व्यवहार में हिब्रू भाषा का ही प्रयोग करते थे यद्यपि ज्ञान-विज्ञान, राजकाज में जर्मन भाषा के प्रयोग में पूर्णतया निष्णात थे। स्वतन्त्र इज़राइल की भाषा हिब्रू है। उच्चतम शिक्षा का माध्यम भी वही है।

महर्षि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा और संस्कृत ही निर्धारित करते। शिक्षण व्यवस्था गुरुकुलों में होती। गुरुकुलों में शिक्षा प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारियों और ब्रह्मचारणियों में वर्ग भेद नहीं होता। ब्रह्मचारी उच्चवर्ग से है तथा निम्नवर्ग से कार्य आवंटन में पठन-पाठन में कोई भेद नहीं होता।

शिक्षा समाप्ति पर आचार्य द्वारा ब्रह्मचारी के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुरूप 'वर्ण'-ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र दिया जाता था। यह व्यवस्था 'परिवर्तनीय' भी थी है। जन्म जाति से कुछ लेना-देना नहीं होता।

उस वर्ण व्यवस्था की संवाहक आश्रम व्यवस्था होती है। विद्या तेज व बल अर्जित 25 वर्षीय युवक व 16 वर्षीय युवती विवाह योग्य माने जाते हैं। स्वयंवर को सबसे श्रेष्ठ विवाह माना जाता है। कन्या स्वयं अपना वर चुनती है। उस प्रसंग में नारी मनोविज्ञान की

(क्रमशः)

पृष्ठ 2 का शेष-ऐसे धर्म को धिक्कार है...

यह देवता पत्थरों पर भी उकेरे जाने लगे। पराकाष्ठा की स्थिति तो यहां तक पहुंच गई कि ढ़ेले पर कलावा बांधकर उसे सीधे-सीधे गणेश भगवान बना दिया गया।

इस देश में भिखारी से लेकर पुजारी तक मांगकर खाने वालों की फौज खड़ी होती चली गयी। ऋषि ने 'एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति' का जो उपदेश दिया उसके विपरीत बहु देवतावाद का अंतहीन सिलसिला खड़ा हो गया, जो आज भी समाप्त होने का नाम नहीं ले रहा है। पत्थरों, धातुओं और लकड़ियों के टुकड़ों पर तमाम तरह के देवी-देवताओं की विचित्र-विचित्र शक्लें उतारकर देवालयों, मंदिरों और घरों में खड़ी कर दी। यह देवी-देवता आज तक किसी को कुछ नहीं दे सके, बल्कि स्वयं इस कमाऊ समाज पर भार बन जाते हैं। हमारे ही पैदा किये हुए देवता, जो हमारी ही दी हुई व्यवस्था पर जीवित हैं, हमें उन्हीं के आगे मंगिता बनाकर बिठा दिया। वैसे सृष्टि नियम के विरूद्ध बातें सभी मतों में हैं, जैसे मुस्लिम भाई कहते हैं कि हमारे पैगम्बर मोहम्मद साहब ने एक ही उंगली से चांद के दो टुकड़े कर दिये। इसी प्रकार हमारे पुराणों में सबसे अधिक चमत्कारिक बाते हैं, जैसे हनुमान ने अपने बचपन में ही सूर्य को गाल में रख लिया, योगेश्वर श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत अपनी उंगली पर उठा लिया, श्रीकृष्ण द्रोपदी का चीर बढ़ा दिया आदि। भूत-प्रेत, गण्डा, डोरी, श्राद्ध-तर्पण, फलित ज्योतिष, ग्रहों का नाराज होना या खुश होना तथा मूर्तिपूजा व अवतारवाद का मानना अंधविश्वास व पाखण्ड है। क्योंकि यह सब बातें प्रकृति नियम के विरूद्ध हैं। इसलिए इनको न मानकर वैदिक धर्म को मानना ही हर व्यक्ति के लिए श्रेयस्कर व लाभदायक होगा।

वैदिक धर्म में ईश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए संध्या करना (जिसे ब्रह्मयज्ञ कहते हैं), दूषित वातावरण को शुद्ध करने के लिए हवन करना (जिसे देवयज्ञ कहते हैं)। शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए यम-नियमों से समाधि तक पहुंचने के लिए अष्टांग योग करना, दूसरों की भलाई के लिए परोपकार करना, वेदों सहित सभी आर्ष ग्रन्थों को पढ़ना और उनके अनुसार जीवन बनाना आदि मुख्य सिद्धांत वैदिक धर्म के हैं। इसलिए हम अपने जीवन को पवित्र स्वस्थ रखना चाहते हैं तो हमें अन्य मतों व पन्थों को छोड़कर वैदिक धर्म अपनाना चाहिए, जिससे हम अपने परिवार, समाज, राष्ट्र व केवल मानव मात्र ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अपने जीवन को सफलता की ऊंचाईयों को छूते हुए मोक्ष के अधिकारी बने। इससे उत्तम अन्य कोई मार्ग नहीं है।

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

वृष्टि यज्ञ कर आर्य समाज ने की शीघ्र वर्षा की कामना

निराश्रित बालक बालिकाओं एवं आर्य युवकों ने निभाई सहभागिता

शीघ्र वर्षा की कामना से आर्यसमाज कोटा द्वारा वृष्टि यज्ञ का आयोजन किया गया। आर्यसमाज कोटा के तत्वावधान में कोटा रंगबाड़ी स्थित मधुस्मृति संस्थान में विश्व शांति एवं मानवमात्र के कल्याण के लिए प्रार्थना की गई।

यज्ञ का प्रारंभ आचार्य अग्निमित्र शास्त्री एवं पं. शोभाराम आर्य धर्मशिक्षक डीएवी कोटा के ब्रह्त्व में हुआ। यजमान हरगोविन्द निर्भिक एवं श्रीमति बृजबाला निर्भिक के साथ यज्ञ में चारों वेद से चयनित वृष्टि सम्बंधि विशेष मंत्रों से निराश्रित बालक-बालिकाओं एवं आर्यसमाज के सदस्य महिला पुरुषों द्वारा विशेष आहुतियां दी गई।

आर्य युवा दल के संजोक किशन आर्य ने उपस्थित जनों का केसरिया पटका पहनाकर अभिनंदन किया। यज्ञ के उपरान्त आर्यसमाज कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा ने अपने सम्बोधन में कहा कि वृष्टि यज्ञ के द्वारा वर्षा के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण होता है। जिला सभा द्वारा विभिन्न स्थानों पर वृष्टि यज्ञ का आयोजन किया जायेगा। जिसकी शुरूआत आज यहां मधुस्मृति संस्थान से हुई है।

कार्यक्रम में आचार्य अग्निम्त्रि शास्त्री ने देवताओं पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि देवता दो प्रकार के होते हैं जड़देवता एवं चेतन देवता। यज्ञों द्वारा दोनों की यथावत पूजा की जाती है।

अपने उद्बोधन में पं. शोभाराम ने कहा कि यज्ञ से बड़े-छोटे, ऊंचे नीचे के बीच का भेद समाप्त होता है। सभी मिलकर समान आसन पर बैठकर आहुतियां देते हैं जिससे समता एवं सहयोग की भावना विकसित होती है। इस अवसर पर आर्यसमाज तलवण्डी के पूर्व प्रधान आर. सी. आर्य ने दूसरों के गुण और अपनी गलतियां देखा करो भजन प्रस्तुत किया। निराश्रित बालगृह के बालक बालिकाओं द्वारा गायत्री मंत्र का सामूहिक रूप से संगीतमय उच्चारण किया गया। इस अवसर पर आर्य युवादल का सहयोग विशेष रूप से रहा। कार्यक्रम की संयोजक डॉ. राधावल्लभ राठौर, तिवारी जी, रामपाल हरियाणा वाले, वेदमित्र वैदिक, शान्तनु शर्मा, कृष्णन राजगुरू, विनोद कुशवाह, किशन आर्य, राजीव आर्य, श्रीमती विमलेश आर्या, संगीता आर्या तथा मधुस्मृति संस्थान की संचालक श्रीमती बृजबाला निर्भीक, हरगोविन्द निर्भीक एवं बालक-बालिकाएं व अन्य उपस्थित रहे।

-अर्जुन देव चढ्डा

वेदवाणी

हे अनन्त देव ! हम तुझे कैसे हवि दें

का त उपेतिर्मनसो वराय भुवदग्ने शंतमा का मनीषा।
को वा यज्ञैः परि दक्षं त आप केन वा ते मनसा दाशेम।।
–ऋ० १।७६।१
ऋषिः–गोतमो राहुगणः।। देवता–अग्निः।। छन्दः–निचृत्पङ्क्तिः।।

विनय–हे अनन्त देव ! हम परिमित मनुष्य किसी भी प्रकार से तेरे सम्पूर्ण रूप को ग्रहण नहीं कर सकते। हम अपने अपूर्ण साधनों द्वारा तेरे पास पहुँचने के लिए–तुझसे वर लेने के लिए जीवन–भर यही करते रहते हैं। हमारे मन में यह सामर्थ्य नहीं कि वह तेरे परिपूर्ण रूप का कभी मन कर सके, फिर तेरे पास पहुँचने का साधन, उपाय हमारे पास क्या है? हम कभी समझते हैं कि शायद हम हार्दिक भक्ति करके तुझसे सुख पहुँचा लेंगे, परन्तु यह तो हमारा तेरे विषय में सांसारिक भाषा में बोलना मात्र है। भक्ति से हमें बेशक बड़ा लाभ मिलता है, परन्तु हमारी हार्दिक प्रार्थनाओं या स्तुतियों का तुझपर वास्तव में किसी प्रकार का प्रभाव नहीं होता। तू तो शुद्धस्वरूप में अलिप्त रहता है। मनुष्य समझते हैं कि यज्ञ तो बड़ी व्यापक वस्तु है, अतः शायद यज्ञ तेरी परिपूर्ण वृद्धि और बल को ग्रहण करने में पर्याप्त हो सकेंगे, परन्तु ऐसा नहीं होता। तू केवल अपने ही परिपूर्ण यज्ञ से अपने को पा सकता है, परन्तु मनुष्य के लिए यज्ञ तो कभी ऐसे परिपूर्ण नहीं हो सकते कि उन यज्ञों से तेरी अनन्त महत्ता का, तेरे अनन्त बल का पार पाया जा सके। ये सब यज्ञ कुछ–कुछ अंश में ही तुझे व्याप्त कर पाते हैं। हम तो बेशक तेरे उतने अंश की प्राप्ति से ही कृतकृत्य हो जाते हैं–''प्यासे को तो एक लोटा–भर पानी पर्याप्त है, उसे समुद्र की गहराई मापने की क्या आवश्यकता है?'' परन्तु सत्य यह है कि हम तेरी गहराई को माप नहीं सकते; यज्ञ भी इसमें असमर्थ हैं। यह क्यों न हो ? क्योंकि सब स्तुति, भक्ति और यज्ञ आदि हम अपने मन द्वारा ही तो करते हैं ; और इस हमारे मन में शक्ति ही कितनी है ! अतः यह कहना चाहिए कि हमारा मन ही तुम्हारे योग्य नहीं है। मनुष्य के क्षुद्र मन की तुम अगम तक पहुँच ही नहीं है। फिर वह तन हम कहाँ से लाएँ जिस द्वारा हम अपनी यह भक्ति व यज्ञ व ज्ञान की आहुति तुझ तक पहुँचा सकें ? ओह ! सचमुच यह स्थूल और सूक्ष्म शरीरों में बँधा हुआ मनुष्य तेरी परिपूर्ण उपासना–तेरी परिपूर्ण आराधना–कभी नहीं कर सकता।

आर्य समाज फोकल प्वायंट लुधियाना का चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज के नवनिर्वाचित अधिकारी एवं सदस्य सामूहिक चित्र खिंचवाते हुए।

आर्य समाज फोकल प्वायंट लुधियाना का वार्षिक चुनाव दिनांक 26 जून 2017 को आर्य समाज मन्दिर में सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम यज्ञ हुआ जिसमें सभी आर्यजनों ने आहुतियां डालकर परमपिता परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त किया। सत्संग के पश्चात चुनाव की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। इस चुनाव में आर्य समाज के सभी सदस्यों ने भाग लिया। इस अवसर पर आगामी वर्ष के लिए श्री विजय करण गुप्ता जी को प्रधान, श्री महेन्द्र प्रताप आर्य को मन्त्री तथा श्री भारत भूषण जी को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया। आर्य समाज के सभी सदस्यों ने नवनिर्वाचित अधिकारियों को शुभकामनाएं दी। सभी अधिकारियों ने मिलजुल कर कार्य करते हुए आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। शांतिपाठ के साथ कार्यवाही को सम्पन्न किया गया।

–महेन्द्र प्रताप आर्य
मन्त्री आर्य समाज, लुधियाना

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।